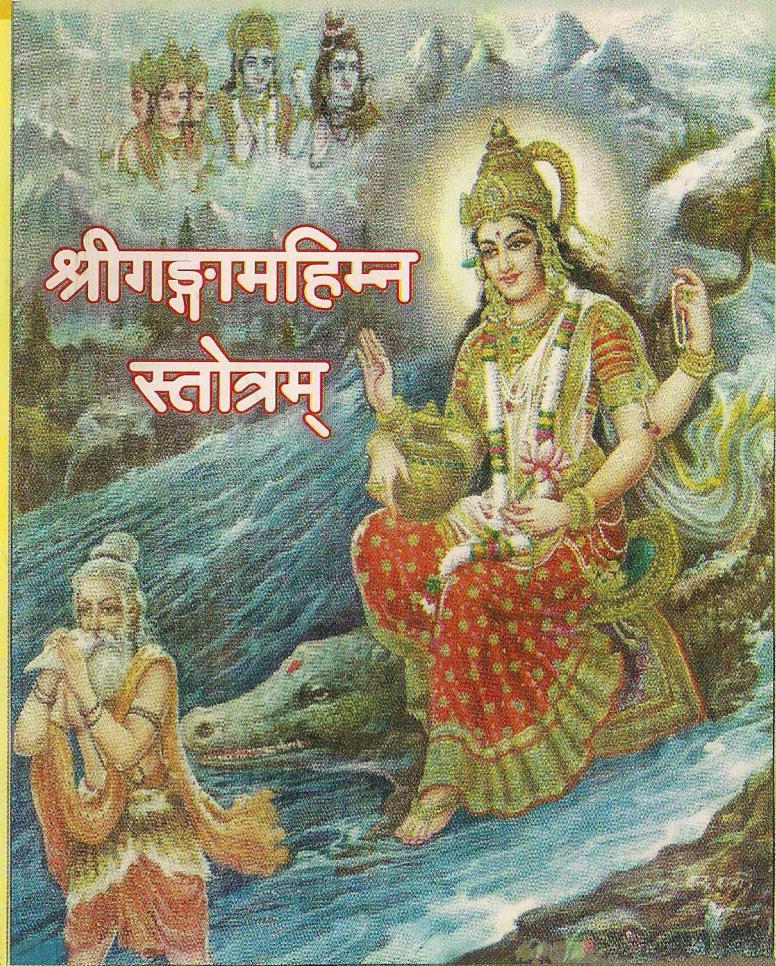


श्रीगङ्गामहिम स्तोत्रम्



:: प्रणेता ::
धर्मचक्रवर्ती महाभहोपाध्याय जगद्गुरु दाब्दानन्दाचार्य
स्वामी दामभद्राचार्य जी महाराज
(चित्रकूटधाम)

विश्वविलक्षणविभूति



धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय वाचस्पति कविकुलरत्न
श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामी दामभद्राचार्य जी महादज्ज

जीवनपर्यन्त कुलाधिपति

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उ०प्र०)

कृ श्रीमद्राघवो विजयतेराम् कृ

श्रीगङ्गामहिमस्तोत्रम्

प्रणेता

धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय कविकुलरत्न वाचस्पति
श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

प्रकाशक :

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उ०प्र०)

प्रकाशक :

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उ०प्र०)

सर्वाधिकार- प्रणेताधीन

प्रथम संस्करण- संवत् 2054 श्रीगङ्गादशहरा
द्वितीय संस्करण- संवत् 2067 श्रीगङ्गादशहरा

न्यौछावर- दस रुपये मात्र

सौजन्य- हरे कृष्ण सेवान्यास समिति (पंजी०)

A-159 आशियाना, कैंथ रोड़ मुरादाबाद (उ०प्र०)

मुद्रक-

श्रीराघव प्रिंटर्स

जी- 17 तिरुपति प्लाजा बैगम पुल रोड़ बच्चा पार्क
मेरठ (उ० प्र०)

फोन- 0121-4002639

प्राक्कथन

संयोग ही कहा जा सकता है कि एक बार हरिद्वारस्थ वसिष्ठायनम् में प्रातः श्रीराघवसेवा के समय पूज्यपाद जगद्गुरु जी के लिए मेरे मुख से अचानक सम्बोधन में “महाराज जी” शब्द निकल गया, तुरन्त पूज्य आचार्यचरण ने स्नेहपूर्वक प्रतिवाद करते हुए कहा कि मैं महाराज नहीं हूँ। महाराज तो वह होता है जो भोजन बनाता है। मैं तुम्हें अभी अपनी सात्त्विक प्रतिभा के बलपर सिद्ध करता हूँ कि मैं महाराज नहीं हूँ। इस कथन के तुरन्त पश्चात् पूज्य जगद्गुरु जी ने शिखरिणी छन्द में श्रीगङ्गाजी के स्तुतिपरक दिव्य, भव्य, सरस, सुमधुर एवं सारगर्भित ३७ श्लोकों का सद्यःप्रणयन करके अपने लोकोत्तर वैदुष्य एवं भगवत्प्रेमाभक्ति का साक्षात्कार कराया। आस्तिक समाज में अपने मार्गदर्शक आचार्यों द्वारा ऐसा स्तवन महनीय उत्सव के समान होता है। इसी पवित्र भावना से प्रस्तुत ‘गङ्गामहिमस्तोत्रम्’ को पूज्य जगद्गुरु जी के स्नेहभाजन गाजियाबादस्थ त्रिपुटी (ध्येय = आचार्य दिवाकर शर्मा, ध्यान = डा० सुरेन्द्र शर्मा ‘सुशील’ तथा ध्याता = दिनेश कुमार गौतम) द्वारा प्रकाशित कराकर माँ भागीरथी के भक्तों की सेवा में सश्रद्ध समर्पित किया जा रहा है। निर्व्याज करुणा करने वाले पूज्यपाद जगद्गुरु जी के प्रति मैं सदैव ऋणी रहूँगा जिन्होंने स्वान्तःसुखाय गङ्गास्तवन रचकर आस्तिक जनता पर अपार अनुग्रह किया है। साथ ही अपनी ‘त्रिपुटी’ को अपने शुभाशीर्वाद इस प्रकार दिए-

श्रीमद्दिवाकर सुशील दिनेश रूपा शिष्यत्रयी विमलभूसुरवंश भूपा।
गङ्गामहिम्नितिमत्स्तवनं प्रकाश्य साहित्यसम्पुटपुटीं त्रिपुटी पिपर्तु॥

श्री गङ्गादशहरा

विक्रम संवत् २०५४

गुरुवरचरणचञ्चरीक
डा० सुरेन्द्र शर्मा 'सुशील'
डी-२५५ गोविन्दपुरम्
गाजियाबाद।

दूरभाष- ९८६८९३२७५५

दो शब्द द्वितीय संस्करण के

प्रस्तुत स्तोत्र की लोकप्रियता बहुत अधिक बढ़ गयी। अतः आस्तिक जनता की माँग को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को पुनः प्रकाशित कराया जा रहा है। अबकी बार इसके प्रकाशन की व्ययसेवा "हरे कृष्ण सेवान्यास समिति (पंजी०) A-१५९ आशियाना कैथरोड मुरादाबाद (उ०प्र०)" के द्वारा हुई है अतः इस समिति के प्रति हम आभारी हैं। भगवान् श्रीसीताराम जी सभी का मङ्गल करें।

ॐ श्रीमद्राघवो विजयतेतराम् ॐ
नमोऽस्तु गंगायै

श्रीगङ्गामहिम्नस्तोत्रम्

महिम्नस्तेऽपारं सकलसुखसारं त्रिपथगे
प्रतर्तुं कूपारं जगति मतिमान् पारयति कः।
तथापि त्वत्पादाम्बुजतरणिरज्ञोऽपि भवितुम्
समीहे तद्विपृष्ट् क्षपितभवपङ्कः सुरधुनि॥१॥

भावार्थ- हे त्रिपथगे! अर्थात् स्वर्ग, पाताल और मर्त्यलोक इन तीनों लोकों में विराजमान माँ गङ्गे! सम्पूर्ण सुखों के सार स्वरूप आपकी महिमा के अपार महासागर को पार करने के लिए भला इस संसार में कौन बुद्धिमान सक्षम हो सकता है तथापि हे देवसरिते! मैं अज्ञ होकर भी आपके श्रीचरणकमलरूप नौका का अवलम्ब लेकर आपकी ही महामहिमा के उस महासागर के कतिपय बिन्दुओं से अपने भवपङ्क अर्थात् सांसारिक मोह के कीचड़ को नष्ट करने की चेष्टा मात्र करता हूँ क्योंकि आपके गुणगान से जीव का संसारमल समाप्त हो जाता है।

समुद्रभूता भूम्नश्वरण वन जातान्मधुरिपो-
स्तो धातुपात्रे गदितगुणगात्रे समुसिता।
पुनः शम्भोश्शूडासितकुसुममालायित तनुः
सुरान्त्रिंशत्कर्तुं किल जगति जागर्सि जननि॥२॥

भावार्थ- हे माँ गङ्गे! आप सर्वप्रथम वेदवेद्यभूमा मधुसूदन भगवान्

नारायण के चरणकमल से प्रकट हुई तदनन्तर जिस कमण्डलु के प्रत्येक अंग की गुणावलि का गान वेदों ने किया है, भगवान् ब्रह्माजी के उसी पवित्र जलपात्र (कमण्डल) में विश्राम लिया, पुनः भगवान् शंकर की चूडामणि की कुसुममाला बनकर आपने अलौकिक शोभा प्राप्त की। वस्तुतः इन तीनों देवताओं को सम्मानित करने के लिए ही आप संसार में जागरूक हैं क्योंकि यदि आपकी पूर्वोक्त ये तीनों लीलाएँ न रही होतीं तो कदाचित् विधिहरिहर का इतना सम्मान न होता।

तैवश्वर्यं स्वर्योषिदमलं शिरोगुच्छविगलत्
प्रसूनव्यालोलन्मधुकरं समुद्गीतचरिते।
न चेशो भूतेशः पुनरथनशेषो न च गुरुः
परिज्ञातुं वकुं जननि मम धृष्टा मुखरता॥३॥

भावार्थ- हे माँ भागीरथि ! देववधुओं के शिरों के गुच्छों से गिरते हुए नन्दनवन के पुष्पों पर मँडराने वाले भ्रमरों ने जिनके सुन्दर चरित्रों का उद्गीथ गान किया है ऐसी आपश्री के महामहिम ऐश्वर्य को पूर्ण रूप से जानने एवं कहने में जहाँ स्वयं भगवान् शंकर भगवान् शेष तथा देवगुरु बृहस्पति भी न समर्थ हों वहाँ मैं कुछ कहने का साहस करूँ- यह विडम्बना ही तो है, क्योंकि मुखरता स्वयं बहुत धृष्ट (ढीठ) होती है।

अनङ्गरङ्गे कृतरमणं रंगेशुचितया
समाभग्नासंगे विहितभवभंगे तु भजताम्।
विनश्यद्व्यासंगे प्रणतजनताया स्वपयसा
तरङ्गं प्रोक्तुङ्गे ननु जगति गङ्गे विजयसे॥४॥

(६)

भावार्थ- भगवान् शंकर के उत्तमाङ्ग (शिरोभाग) में अनुकूल क्रीडारंग भूमिका निर्माण करने वाली तथा अपने भक्तों की संसारासक्ति को नष्ट करके उन्हें भवभय से मुक्त करने वाली, अपने चरणसेवकों के वेदविरोधी व्यसनों को नष्ट करने वाली एवं अपनी विशाल तरङ्गों के कारण विपुल वैभवसम्पन्न हे गङ्गे ! आप संसार में सर्वश्रेष्ठ भगवदरूप में विराज रहीं हैं। आपकी जय हो।

हरन्ती सन्तापं त्रिविधमथपापं जलजुषाम्
द्विषन्ती सन्देशं क्षपितभवलेशं सुकृतिनाम्।
तुदन्ती नैराश्यं कलुषमथदास्यं प्रददति
विलोलत्कल्लोले विवुधवरवीथिर्विजयसे॥५॥

भावार्थ- हे लोल लहरों वाली माँ गङ्गे ! अपने सुधामय जल का सेवन करने वालों के संताप एवं कायिक, वाचिक मानसिक इन तीनों पापों को हरण करती हुई तथा परमबड़भागी अपने भक्तों को भवबन्धन से रहित दिव्य ब्रह्मसन्देश देती हुई एवं भावुकों की निराशा एवं उनके कालुष्य को समाप्त करके उन्हें अपनी सेवा का अधिकार प्रदान करती हुई ऐसी सर्वश्रेष्ठ देवनदी के रूप में विराजमान माँ गङ्गे ! आपकी जय हो।

ददाना वात्सल्यं शमितशमशल्यं स्वपयसा
दधाना तारुण्यं तरुणकरुणा पूर्णहृदया।
वसाना कौशेयं शशिनिभममेयं भगवति
पुनाना त्रैलोक्यं जयसि ननु भागीरथि शुभे॥६॥

(७)

भावार्थ- हे भगवति! भागीरथि! हे कल्याणमयि माँ गङ्गे! इन्द्रियों की विजय में आने वाले विघ्नों के नाशक अपने दिव्य वात्सल्य को प्रदान करती हुई एवं जलधाराओं की दृष्टि से निरन्तर नवीनता को धारण करती हुई नित्य नूतन करुणापूर्ण हृदयवाली तथा चन्द्रमा के समान श्वेत वस्त्र धारण करती हुई एवं तीनों लोकों को पवित्र करती हुई आप माँ गङ्गा की निरन्तर जय हो जय हो।

निराकारं केचिदप्रणिदधत् आवर्जितधियो
नराकारं चान्ये प्रणतिरतिधन्ये स्वमनसि।
त्रिभिस्तापैस्तप्ताः पुनरथ परं केचन वयं
सदानीराकारं सुरनदि भजामस्तव पदम्॥७॥

भावार्थ- हे देवनदि! कुछ लोग विषयों से बुद्धि को हटाकर निराकार ब्रह्म का यौगिक प्रक्रिया से ध्यान करते हैं तथा कुछ लोग विनम्र एवं भक्ति से धन्य किये हुए अपने निर्मल मन में, नराकार ब्रह्म का श्रीरामकृष्णादि रूप में भजन करते हैं किन्तु हे भागीरथि! हम कुछ ऐसे लोग हैं जो तीनों तापों से तप्त होकर नीराकार अर्थात् साक्षात् जलरूप में परिणत ब्रह्मद्रवरूप आपकी ही उपासना करते हैं।

न जाने वागीशं नहि किल शचीशं न च गुहं
न जाने गौरीशं नहि किल गणेशं नहि गुरुम्।
न चैवान्यान्देवान् प्रिय विविध सेवान् त्रिपथगे
सदारामाभिन्नं ननु जननि जाने तव जलम्॥८॥

(८)

भावार्थ- हे त्रिपथगामिनि! मैं वागीश अर्थात् ब्रह्मा जी को नहीं जानता और न ही मैं शचीश अर्थात् इन्द्र को और न ही गुह अर्थात् कार्तिकेय जी को जानता हूँ मैं गौरीश भगवान् शंकर तथा गणेश एवं बृहस्पति को भी नहीं जानता। हे माँ! जिन्हें अनेक सेवाएँ प्रिय हैं ऐसे अन्य वेदविहित तीनों करोड़ देवताओं को नहीं जानता। मैं तो केवल भगवान् श्रीराम से अभिन्न आपके जलमात्र को जानता हूँ और आपके जल को ही श्रीराम रूप में मानता हूँ।

पचत्कायक्लेशं विविध विधकर्मभ्रममलं
हरन्मायालेशं विसुतनिदेशं विफलयन्।
द्वुतं विघ्नदाविघ्नान् कुटिलकलिनिघ्नान् विकलयन्
महामोहं गङ्गे! जयति भुवि ते जाह्नवि! जलम्॥९॥

भावार्थ- हे जहूपुत्रि! हे माँ गङ्गे! शरीर के पाँच क्लेशों एवं वैदिक कर्मों में आने वाले भ्रम तथा अज्ञानजनित मल को हरता हुआ अर्थात् समाप्त करता हुआ तथा माया के सम्बन्ध को विनष्ट करता हुआ एवं सूर्यपुत्र यमराज के आदेश को विफल करता हुआ तथा कुटिल कलिकाल के अधीनस्थ अनेक विघ्नों को शीघ्रता से विनष्ट करता हुआ एवं महामोह को व्याकुल करता हुआ आपश्री गङ्गा माँ का अलौकिक जल सर्वश्रेष्ठ है उसकी जय हो।

(९)

उदन्वन्नैराशयं दमयितुमथाविष्कृततनो-
 मनोर्वशं हंसार्पित विमलकीर्ति प्रथयितुम्।
 सुधासारं सारस्वतहतविकारं श्रुतमयं
 तवापूर्वं पूर्वं प्रणिगदति गङ्गे जलमलम्॥१०॥

भावार्थ- हे गङ्गे माँ! समुद्र की निराशा को नष्ट करने के लिए एवं भगवान् सूर्य द्वारा जिसे विमल कीर्ति अर्पित की गई है ऐसे वैवस्वत मनु के वंश को समस्त विश्व में उजागर करने के लिए ही जिन्होंने दिव्य जल रूप स्वीकार कर लिया है ऐसी आप श्रीगङ्गा जी के पूर्व में सम्पन्न हुए इस अपूर्व सुयश को सारस्वतों अर्थात् विद्वानों के विकार को दूर करने वाला आपका यह जल अपनी कल-कल ध्वनि से निरन्तर गा रहा है।

किमेतत् सौन्दर्यं धृतवपुरथोबालशशिनः
 किमाहो माधुर्यं जनकतनया प्रेममहितम्।
 द्वुतब्रह्मीभूतं परममथपूतं वसुमती
 विराजत्पीयूषं शुचि वहति गांगं जलमहो॥११॥

भावार्थ- इस भूमण्डल का अमृत बना हुआ जो यह भगवती गङ्गा जी का जल बह रहा है क्या यह मूर्तिमान बालचन्द्रशेखर भगवान् शंकर का सौन्दर्य है? अथवा भगवती श्रीसीताजी का परम-प्रेमपूजित श्रीराम विषयक माधुर्य है। वस्तुतः यह गङ्गाजल साक्षात् ब्रह्मद्रव ही है। अर्थात् श्री सीताराम ही पिघलकर गङ्गाजलरूप में विराजमान हो रहे हैं।

(१०)

मुनीन्द्रा योगीन्द्रा यमनियमनिष्ठाः श्रुतिपरा
 विरक्ताः संन्यस्ताः सततमनुरक्ता दृढधियः।।
 वसन्तस्त्वत्तीरे मलयजसमीरे सुमनसो
 लभन्ते तत्त्वं सुविमलपरब्रह्ममहितम्॥१२॥

भावार्थ- हे माँ गङ्गे! मलय वायु से सुशोभित आपके सुन्दर तट पर निवास करते हुए अपने मन को निगृहीत करके मुनीन्द्र योगीन्द्र अहिंसा आदि नियम और तप आदि नियमों में निरत परमविरक्त संन्यासी एवं परम भगवत्प्रेमी वीतराग महात्मागण वेदों में सम्मानित उस परब्रह्मतत्त्व को प्राप्त कर लेते हैं।

विरक्ता वैराग्यं परममथ भाग्यं सुकृतिनः
 सुसन्तस्त्वंतोषं विमलगुणपोषं मुनिगणा।
 नृपाराज्यं प्राज्यं गृहिण इतरे भूरि विभवं
 लभन्ते वै त्वत्स्त्वमसि सुरंधेनुस्तनुभृताम्॥१३॥

भावार्थ- हे माँ गङ्गे! विरक्त लोग वैराग्य सुकृतिगण परमभाग्य तथा सन्तजन आत्मसंतोष एवं मुनिजन सात्त्विक गुणों का पोषण राजा राज्य, गृहस्थजन स्वर्णादि सम्पत्ति और अन्य अर्थार्थीजन पुत्रादि सम्पत्ति आपसे ही प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि आप प्राणिमात्र के लिए कामधेनु के समान कामनाप्रदायिनी हैं।

गतैश्वर्यान् दीनान् कपिलमुनि कोपाग्निशलभान्
 निमग्नाज्च्छोकाव्यौ सगरनृपतेर्वक्ष्य तनयान्।।
 कृपासिन्धुर्भागीरथं विनत भावोग्रतपसा
 द्वुतायाता गङ्गा ननु सकरुणं मातृहृदयम्॥१४॥

(११)

भावार्थ- हे करुण हृदया माँ, जिनका ऐश्वर्य समाप्त हो गया था और जो दीन होकर महर्षि कपिल की क्रोधाग्नि के पतंगे बनकर भस्मसात् हो चुके थे ऐसे सगर पुत्रों को शोकसागर में पड़े हुए देखकर तथा महाराज भगीरथ की विनम्र एवं उग्र तपस्या से द्रवीभूत होकर आप इस पृथ्वी पर आ गयीं। निश्चय ही माँ का हृदय अत्यन्त करुणापूर्ण होता है।

मुरारे: पादाब्जशश्रुतपरममकरन्दममलं
द्वुतं व्योम्नो वेगान् मधुमथनपादोदकमिति।
दधौमूर्धना शर्वो विलुलित जटाजूट चषके
ततो लोके ख्यातस्त्रिदशनदि गंगाधर इति॥१५॥

भावार्थ- हे देवनदी माता गङ्गे ! भगवान् नारायण के चरणकमल से उत्पन्न निर्मल मकरन्द रूप आप जब आकाश से परमवेग पूर्वक पृथ्वी पर उतरने लगीं तब भगवान् शंकर ने मधुसूदन श्रीमन्महाविष्णु का चरणोदक मानकर आदरातिशय के कारण आपको अपने शिर से अपने जटाजूट के पात्र में धारण कर लिया इसीलिए वे शिवजी लोक में गङ्गाधर नाम से विख्यात हुए।

पतन्ती पातीत्यं क्षपयितुमहोगाज्च गगनाद
गतागङ्गेत्येवं जननि भुवने ख्यातिमगमः।
ततः पीत्वोन्मुक्तापरमयमिना जह्नुमुनिना
अतस्त्वां वै प्राहुर्विवुद्धनिकरा जह्नुतनयाम्॥१६॥

भावार्थ- हे देवि ! लोक के पातित्य को दूर करने के लिए परमवेग

(१२)

से आकाशमण्डल से उतरकर आप पृथ्वी पर गयीं इसलिए 'गङ्गा' इस नाम से आपको ख्याति प्राप्त हुई फिर परम तपस्वी जह्नु मुनि ने आपको पानकर पुनः मुक्त किया इसीलिए विद्वान् लोग आपको जह्नुतनया अर्थात् जाह्नवी भी कहते हैं।

सुधाधाराधारा हतभवविकारा प्रतिपृष्ठद्
वहन्ती राजन्ती रजतसुममालेवधरणेः।
सुवत्से ! श्रीवत्साम्बुजचरण सौन्दर्य सुषमा
जयत्येषा गङ्गा तरलिततरङ्गा त्रिपथगा॥१७॥

भावार्थ- जो अपनी दिव्य धाराओं से सांसारिक विकारों को समाप्त कर डालती हैं तथा जो अपने प्रत्येक बिन्दु में अमृत की धारा बहाती रहती हैं तथा जो पृथ्वी के सुन्दर वक्ष पर रजतपुष्ट अर्थात् बेला पुष्ट की माला की भाँति सुशोभित हैं ऐसी श्रीवत्सलाञ्छन भगवान् विष्णु के श्रीचरणकमल के सौन्दर्य की परमशोभा रूप चञ्चल तरंगों वाली त्रिपथगामिनी भगवती श्रीगङ्गा जी की जय हो।

क्वचिद् विष्णोः पार्श्वे कृतकमनकन्यावपुरहो
क्वचिद्व्यातुः पात्रे गुणगरिम सर्वस्वममलम्।
क्वचित्कान्ताशान्ता पुरहरजटाजूटलसिता
विधत्से सौभाग्यं त्रिषु त्रिविधरूपा त्रिपथगे॥१८॥

भावार्थ- हे त्रिपथगामिनि माँ गङ्गे ! आप कहीं भगवान् श्रीविष्णु के समीप सुन्दर कन्या के रूप में, तो कहीं ब्रह्मा जी के कमण्डलु में गुणों की

(१३)

गरिमा से युक्त सर्वस्वधन बनकर, पुनः कहीं भगवान् शंकर की जटाजूट की शोभा बढ़ाती हुई एक कमनीय कान्ता की भूमिका निभाती हुई, अपने इन तीन रूपों से ब्रह्मा, विष्णु, शंकर इन तीनों देवताओं के सौभाग्य का संवर्धन ही करती रहती हैं।

द्रवन्ती त्वं वेगादभिजलनिधिं गोमुखतलात्
सहस्रैधाराणां निहतशत शैलेन्द्र शिखरा।
समुद्धर्तु मातर्निरयपतितान् राजतनयान्
स्ववत्सान् वात्सल्यात् किल गवसि गौरी सहचरी॥१९॥

भावार्थ- हे भगवती पार्वती की सहचरी सखी, माता गङ्गे अपने बछड़े को निहारकर वत्सला गौ की भाँति वात्सल्य के अतिरेक से उद्देलित होकर स्वयं आप पिघलकर नरक में पड़े हुए सगरपुत्रों का उद्धार करने के लिए अपनी सहस्रों धाराओं से पर्वतराज हिमालय के सैकड़ों शिखरों को तोड़ती हुई गोमुख से सागर की ओर परमवेग से दौड़ पड़ती हैं।

प्रायाता शैलेन्द्राद् विमलितहरिद्वारधरणी
प्रयागे सद्रागे समगतमुदा सूर्यसुतया।
ततोऽकार्षीः काशीं सुकृतसुखराशिं स्वपयसा
महीयांसं मातस्तव च महिमा कं न कुरुते॥२०॥

भावार्थ- हे माँ भागीरथि ! आपश्री ने शैलराज हिमालय की चरमोच्च शिखर गङ्गोत्री से सागर की ओर प्रयाण किया और मध्य में अपने विमल जल से हरिद्वार की धरणी को पावन किया, अनन्तर जहाँ सन्तों का निरन्तर

(१४)

राग रहता है उस तीर्थराज प्रयाग में सूर्यतनया यमुना जी से मिलकर उसे तीर्थराज बनाया। फिर अपने दिव्य जल से श्रीकाशी सम्पूर्ण सुखों एवं पुण्यों की राशि बना दी। हे माँ ! आपकी यह महिमा भला किसको महान नहीं बना देती।

महापापास्तापापहतमनसो मन्दमतसः
क्षपाटा वाचाटा: पतितपतिता मोहमलिनाः।
त्वयि स्नात्वा शुद्धा विमलवपुषो विष्णुसदनं
व्रजन्त्येतेऽगम्योऽमरनदि तव स्नानमहिमा॥२१॥

भावार्थ- हे देवताओं की नदी माँ गङ्गे ! आपके स्नान की महिमा तो वेदों के लिए भी अगम्य है क्योंकि महापापी, तीनों तापों से नष्ट मनोवृत्ति वाले, व्यवहार और आचार इन दोनों से पतित, मोह से मलिन, ऐसे नीच प्राणी भी आप (श्रीगङ्गा जी) में स्नान करके परम पवित्र होकर भगवत्सेवा के लिए उपयुक्त दिव्य शरीर प्राप्त करके विष्णुसदन अर्थात् वैकुण्ठ को प्राप्त कर लेते हैं।

रट्तः साम्रेडं हरहरहरेतिध्वनिमहो
कट्तः कारुण्यं क्षपितनिजभक्ताधनिकराः।
वट्त्तो वात्सल्यं तुलित रघुनाथैक यशसो
जयन्त्येते गाङ्गा दिशि दिशि तरङ्गास्तरलिताः॥२२॥

भावार्थ- अहो ! निरन्तर हर हर इस ध्वनि को रटते हुए तथा अपने भक्तों के भयसमूह को नष्ट करके उन पर असीम करुणा की वर्षा

(१५)

करते हुए एवं वात्सल्य का वितरण करते हुए श्रीघुनाथ जी के विमल सुयश के समान ही सम्पूर्ण दिशाओं में व्याप्त श्रीगङ्गा जी की इन तरल तरङ्गों की जय हो।

वसन्‌गंगातीरे कृततृणकुटीरे प्रतिदिनं
निमज्जंस्वत्तीरे शिशिरित समीरेऽमृत जलम्।
मुदाचामन्सीतापतिपदसरोजार्चनपरो
यमाद्रामानन्दः कथमुपरि भीतो भुवि भवेत्॥२३॥

भावार्थ- गङ्गा के तट पर पर्णकुटी बनाकर निवास करता हुआ तथा वायु को भी शीतल कर देने वाले आपके जल में प्रतिदिन अवगाहन करता हुआ एवं आपके पवित्र जल को प्रसन्नता से आचमन करता हुआ तथा श्रीसीतापति भगवान् राम का पूजन करने वाला और उन्हें प्रभु श्रीराम में आनन्द की अनुभूति करने वाला साधक भला यमराज से क्यों डरे?

तवाद्भिः स्याम् विष्णुर्नहि नहि तदा स्यान्मम पदे
अथोशभुश्वेन्नो शिवसमतया स्यामहमधी।
अतो याचे भागीरथि पुनरहं देवि! भवतीं
वसन् त्वत्तीरेषु स्वमनसि भजेयं रघुपतिम्॥२४॥

भावार्थ- हे माँ भागीरथि! आपश्री के जल में इतना सामर्थ्य है कि वह मुझे विष्णु बना सकता है परन्तु मैं विष्णु नहीं बनना चाहता क्योंकि यदि मैं विष्णु बन जाऊँगा तब आप मेरे चरण में आ जाएँगी जबकि यह मुझे कभी भी इष्ट नहीं है, हाँ यदि शिव बनूँ तब तो आप, मेरे मस्तक पर

(१६)

आ सकेंगी परन्तु मैं साधारण जीव भगवान् शंकर की समता करके भयंकर पाप का भागी बन जाऊँगा। अतएव हे गंगा देवि! आपसे मैं बारम्बार यही माँग रहा हूँ कि आजीवन आपके तटों पर विचरण करके भगवान् श्रीसीताराम का भजन करता रहूँ।

कदा गङ्गातीरे मलयजसमीरे किल वसन्
स्मरन्सीतारामौ पुलकिततनुः साश्रुनयनः।
अये मातर्गङ्गे! रघुपति पदाभ्योरुहरतिं
प्रदेहीत्यायाचे ननु निमिषमेष्यामि ससुखम्॥२५॥

भावार्थ- मैं मलय शीतल वायु से युक्त गंगाट पर निवास करता हुआ पुलकित शरीर एवं प्रेमाश्रुपूर्ण नेत्रों से श्रीसीताराम का स्मरण करता हुआ है माँ गङ्गे! मुझे भगवान् श्रीराम के चरणकमल में भक्ति दीजिए इस प्रकार आपसे याचना करता हुआ प्रत्येक क्षण को कब सुखपूर्वक बिताऊँगा।

विशेष्यंसोद्देशं यदनवद्यमनन्तं चिदचिदो-
विशिष्टं यत्ताभ्यां श्रुतिगणगिरागीतचरितम्।
यदद्वैतं ब्रह्मप्रथितमथयद् व्यापकममिदं
सदेतत्तत्तत्वं त्वमसि किल गङ्गे भगवती॥२६॥

भावार्थ- हे भगवती गङ्गे! प्रपञ्चन के कष्ठहरणरूप उद्देश्य को आधार बनाकर जो निष्पाप अनन्त परब्रह्म परमात्मा चित् और अचित् के विशेष्य तथा उन्हें से विशिष्ट बने और चिदचिद विशिष्ट होकर जो वेदों के भिन्न-भिन्न अनुवाकों से चरित्रगान के विषय भी बनाए गए और जिन्हें

(१७)

विशिष्टाद्वैत, ब्रह्म, व्यापक, एक एवं सीमा रहित तत्त्वरूप में कहा गया वह
अलौकिक तत्त्व परब्रह्म पद आप ही हैं।

त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वमसि रविचन्द्रौ त्वमसि भू-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमसि शुचि बुद्धिस्त्वमुमनः।
त्वमात्मा त्वं चित्तं त्वमसि मम गौस्त्वं किल पर-
स्त्वमेतत्सर्वं मे भगवति सतत्त्वं जगदहो॥२७॥

भावार्थ- हे भगवती गङ्गे ! आप ही अग्नि और आप ही वायु हैं आप
ही सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, आकाश, सात्त्विक बुद्धि तथा तर्क कुशल मन
भी हैं। किं बहुना आप ही मेरा परब्रह्म सहित संसार भी हैं अहो ! यह हर्ष
का विषय है।

विलोलत्कल्लोलां हृत्कुमतिदोलां श्रुचिपयः
पवित्रत्पातालां क्षपितजनकालां कलजलाम्।
द्रव ब्रह्मीभूतां सगरसुतसंसारं तरणीम्
नमामि त्वां गङ्गां तरलिततरङ्गां स्वजननीम्॥२८॥

भावार्थ- मैं लोल लोल लहरों से युक्त तथा कुमतिरूप चञ्चल
हिंडोले को समाप्त करने वाली एवं अपने दिव्य जल से पाताल को भी
पवित्र करने वाली तथा भक्त के मरण भय को दूर करने वाली ऐसी सुन्दर
जलसम्पन्न द्रवब्रह्मरूप एवं सगरपुत्रों के लिए संसार सागर की नौकारूप
तरलिततरङ्गा अपनी माता गङ्गा को प्रणाम करता हूँ।

(१८)

नमो धर्मिष्ठायै निरुपममहिम्नेऽस्तु च नमो
नमो नर्मिष्ठायै नरपति नरिम्णोऽस्तु च नमः।
नमो नेदिष्ठायै लघुमति लघिम्नेऽस्तु च नमो
नमस्ते गंगायै गिरिगतिगरिम्णोऽस्तु च नमः॥२९॥

भावार्थ- अब अन्तिम शिखरिणी छन्द में भगवती श्रीगङ्गा जी को
सर्वतोभावेननमस्कार किया जा रहा है- परमधर्मिष्ठा माँ भागीरथी को
नमस्कार हो। परम सुखमयी माँ जाह्नवी को नमस्कार तथा श्रीभगीरथ
महाराज के उस नरत्व अर्थात् असाधारण महामानवोचित पुरुषार्थ को
नमस्कार हो जो अपनी उग्र तपस्या से प्रसन्न करके श्रीगङ्गा माँ को इस
धराधाम पर ले आए। हमारे परम निकट रहने वाली गङ्गा तथा मुझ
लघुबुद्धि की लघुता को नमस्कार जो अल्पज्ञ होकर भी साहस करके
आपकी स्तुति में प्रवृत्त हुई। अन्ततोगत्वा मेरी माँ गङ्गा को मेरा नमस्कार
तथा पर्वत पर विचरण करने वाले भगवान् शंकर की उस गुरुता को
नमस्कार जिन्होंने अपनी जटा में सहजता से श्रीगङ्गा जी को धारण किया।

विवुधसरिते नित्यख्यात्यै नमोऽस्तु नमोऽस्तु ते
विमलरजसे वेद स्तुत्यै नमोऽस्तु नमोऽस्तु ते।
धवलमहसे विद्याभूत्यै नमोऽस्तु नमोऽस्तु ते
अमृतपयसे गङ्गा देव्यै नमोऽस्तु नमोऽस्तु ते॥३०॥

भावार्थ- देवताओं की सरिता एवं नित्य ख्याति सम्पन्न माँ गङ्गे
आपको नमस्कार हो नमस्कार हो एवं जिनकी धूलि भी अत्यन्त विमल है

(१९)

तथा वेदों ने जिनकी स्तुति की है ऐसी विष्णुपदी आपको नमस्कार हो नमस्कार हो। श्रेत प्रकाश वाली विद्याशक्ति की विभूतिरूप आपको नमस्कार हो नमस्कार हो तथा अमृतजलसम्पन्न देवी गङ्गा आपको नमस्कार है आपको नमस्कार है।

क्वच च कलिमललीना पापपीना मर्तिर्मे
क्वच परमपवित्रं जाह्नवी सच्चरित्रम्।
त्वदनु चरितभक्तिः प्रैरयन्मां हि रातुम्
जननि तव पदाब्जे पद्यपुष्पोपहारम्॥३१॥

भावार्थ- कहाँ कलियुग के मलों में तल्लीन पापों के कारण स्थूल मेरी बुद्धि और कहाँ परम पवित्र श्रीगङ्गा जी का सुन्दर चरित्र। फिर भी हे माँ आपके चरित्रों में उत्पन्न भक्ति ने ही मुझको आपके श्रीचरण कमलों में पद्य पुष्पोहार समर्पित करने के लिए प्रेरित कर दिया इसमें मेरा कोई दोष नहीं।

हरिचरणसरोज स्यन्दभूताञ्च भूयः
श्रित विधिजलपात्रां चन्द्रचूडार्थमौलिम्।
नृपरतिरथ भूमौ दर्शमायास गंगा
मनुयुगमिह यत्नो भाति भागीरथोऽयम्॥३२॥

भावार्थ- भगवान् श्रीविष्णु के चरणकमल की द्रवीभूतमकरन्द रसराशि एवं ब्रह्मा जी के कमण्डलु को सुशोभित करने वाली तथा चन्द्र अर्थात् भगवान् शंकर की मुकुटमणिस्वरूप भगवती श्रीगङ्गा जी को महाराज

(२०)

भगीरथ की भक्ति ने ही इस पृथ्वी पर दर्शन के लिए सुलभ कर दिया। इसीलिए युग-युग से इस प्रयास को भागीरथ यत्न कहा जाता है।

वन्दे भगीरथं भूयं भग्नसंसारकूपकम्।
यश्चानिनाय गङ्गाख्यं वसुधायां सुधारसम्॥३३॥

भावार्थ- संसार के अन्धकार कूप को नष्ट करने वाले उन महाराज भगीरथ की मैं वन्दना करता हूँ जिन्होंने इस वसुधातल पर गङ्गा नामक सुधारस को ला दिया।

गंगा स्नानात्परं स्नानं नास्ति नास्तीह भूतले।
नास्ति कापि स्तुतिर्गङ्गा महिमस्तोत्रतः परा॥३४॥

भावार्थ- इस संसार में श्रीगङ्गा स्नान से कोई श्रेष्ठ स्नान नहीं एवं गङ्गामहिम्न स्तोत्र से श्रेष्ठ कोई स्तुति नहीं।

यः पठेच्छृणुयाद् वापि गंगाग्रे श्रद्धयान्वितः।
सर्वपापैर्विनिर्मुक्तो व्रजेदविष्णोः परं पदम्॥३५॥

भावार्थ- जो आस्तिक व्यक्ति भगवती श्रीगङ्गा जी के निकट इस स्तोत्र को पढ़ेगा एवं सुनेगा वह सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर श्रीविष्णुलोक को अवश्य प्राप्त कर लेगा।

षडर्णान्नं परो मन्त्रो महिम्नो न परा स्तुतिः।
श्रीरामान्नं परो देवो गंगाया न परा नदी॥३६॥

भावार्थ- षडर्ण अर्थात् षडक्षर श्रीराम मन्त्र से श्रेष्ठ कोई मन्त्र नहीं

(२१)

एवं गङ्गामहिमस्तोत्र से श्रेष्ठ कोई स्तुति नहीं, श्रीराम से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं और श्रीगङ्गाजी से श्रेष्ठ कोई नदी नहीं है।

श्रीरामचन्द्रगुणगायक रामभद्रा-
चार्यण देवगिरिगीत मनुस्मरेद्यः।
स्तोत्रं सुभक्तिकलितस्तनुतां प्रसन्ना
गंगामहिममिति तस्य सुखानि गङ्गा॥ ३७॥

भावार्थ- इस प्रकार भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के गुणों के गायक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य द्वारा देववाणी में स्वरचित गाया हुआ यह गंगामहिमस्तोत्र जो भावुकजन भक्तिपूर्वक स्मरण एवं गान करेंगे भगवती श्रीगङ्गा प्रसन्न होकर उनके जीवन में समस्त सात्त्विक सुखों का विस्तार करेंगी।

॥श्री राघवः शन्तनोतु॥

धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति कविकुलरत्न श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज द्वारा रवित

प्रकाशन सूची

पुस्तक नाम	मूल्य
1. श्रीनारदभक्तिसूत्रेषु श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	101 रुपये प्रति
2. श्रीगीता तात्पर्य (दार्शनिक हिन्दी ग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	20 रुपये प्रति
3. श्रीरामस्तवराजस्तोत्र श्रीराघवकृपाभाष्यम् (हिन्दी अनुवाद)	200 रुपये प्रति
4. ब्रह्मसूत्रेषु श्रीराघवकृपाभाष्यम् (संस्कृत ग्रन्थ)	200 रुपये प्रति
5. श्रीमद्भगवद्गीतासु श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	500 रुपये प्रतिसेट
6. कठोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	150 रुपये प्रति
7. कनोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	90 रुपये प्रति
8. माण्डूक्योपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	60 रुपये प्रति
9. ईशावास्त्रोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	125 रुपये प्रति
10. प्रश्नोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	70 रुपये प्रति
11. तैत्तिरायोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	60 रुपये प्रति
12. एतरेयोपनिषद् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	90 रुपये प्रति
13. श्वेताश्वतरोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	200 रुपये प्रति
14. छाद्योपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	200 रुपये प्रति
15. वृहदरायणकोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	200 रुपये प्रति
16. मुण्डकोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	90 रुपये प्रति
17. श्रीभार्गवराघवीयम् (संस्कृत महाकाव्य) (हिन्दी अनुवाद)	150 रुपये प्रति
18. अरून्धतीमहाकाव्य (हिन्दी महाकाव्य)	75 रुपये प्रति
19. आजादचन्द्रशेखरचरितम् (संस्कृत खण्डकाव्य) (हिन्दी अनुवाद)	30 रुपये प्रति
20. लघुरुचुबम् (संस्कृत खण्डकाव्य) (हिन्दी अनुवाद)	10 रुपये प्रति
21. सरयूलहरी (संस्कृत खण्डकाव्य) (हिन्दी अनुवाद)	10 रुपये प्रति
22. काका विदुर (हिन्दी खण्डकाव्य)	10 रुपये प्रति
23. माँ शबरी (हिन्दी खण्डकाव्य)	20 रुपये प्रति
24. श्रीराघवाभ्युदयम् एकांकी नाटक (संस्कृत) (हिन्दी अनुवाद)	20 रुपये प्रति
25. कुञ्जापत्रम् (संस्कृत पत्रकाव्य)	20 रुपये प्रति
26. राघवगीतगुजन (हिन्दी गीतकाव्य)	20 रुपये प्रति
27. भक्तिगीतसुधा (हिन्दी गीतकाव्य)	20 रुपये प्रति
28. श्रीरामभक्तिसर्वस्वम् (शतकाव्य एवं स्तोत्रकाव्य)	10 रुपये प्रति
29. श्रीराघवभावदर्शनम् (संस्कृत स्तोत्रम्) (हिन्दी अनुवाद)	20 रुपये प्रति
30. प्रभु करि कृपा पाँवरि दीर्घीं	25 रुपये प्रति
31. मानस में तापस प्रसंग	25 रुपये प्रति

32.	परम बड़भागी जटायु	20 रुपये प्रति
33.	श्रीसीताराम विवाहदर्शन (प्रवचन संग्रह)	100 रुपये प्रति
34.	मानस में सुषित्रा	25 रुपये प्रति
35.	श्रीरामचरितमानस (मूल गुटका) (श्रीतुलसीपीठ संस्करण)	50 रुपये प्रति
36.	भावार्थबोधिनी (रामायण टीका)	400 रुपये प्रति
37.	श्रीरासपंचाधारी विमर्श:	50 रुपये प्रति
38.	अहल्याद्वार (प्रवचन संग्रह)	100 रुपये प्रति
39.	तुम पावक मँ करहु निवासा	50 रुपये प्रति
40.	सन्ध्योपासना	10 रुपये प्रति

पूज्यपाद आचार्य श्री के भजन संग्रह (कैसेट्स)

1.	भजन सरयू	30 रुपये प्रति
2.	भजन यमुना	30 रुपये प्रति
3.	भजन सरयू सी० डी० (MP3)	50 रुपये प्रति
4.	भजन यमुना सी० डी० (MP3)	50 रुपये प्रति
5.	सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत कथा (VCD) (जगन्नाथ पुरी एवं बद्रीनाथ जी)	1100 रुपये प्रति
6.	सम्पूर्ण श्रीरामकथा (DVD) (चित्रकूट)	1100 रुपये प्रतिसेट
7.	सम्पूर्ण श्रीरामकथा (VCD) (मुख्वई, कान्दीवली)	1100 रुपये प्रतिसेट
8.	सम्पूर्ण श्रीमद्वालमीकि रामायण कथा (VCD) (हैदराबाद)	1100 रुपये प्रतिसेट

पुस्तक एवं भजन कैसेट्स प्राप्ति स्थान

1. श्रीतुलसीपीठ

आमोदवन, पो० नयागाँव, जि० सतना (म०प्र०) - 485331

फोन नं० - 07670-265478, 05198-224413 मो० - 09450916650

2. जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय

चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) - 210204

E-mail-jrhuniversity@yahoo.com

प्रकाशक :

श्रीतुलसीपीठ

आमोदवन, नयागाँव, चित्रकूट, सतना (म०प्र०) - 485331

नोट : डाक का खर्च क्रेता को वहन करना होगा। विशेष जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट - www.jrhu.com को विजिट करें।

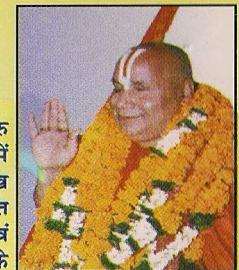
विशेष : उपरिलिखित सभी ग्रन्थ एवं सी०डी० मंगाने के लिए डी०डी० भेजें। डा० कुमारी गीता देवी देय चित्रकूट।

ऋग्वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॐ

धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय, कविकुलरत्न, श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामीरामभद्राचार्य जी महाराज
का

संक्षिप्त परिचय

धर्मचक्रवर्ती श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज वर्तमान युग में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की साक्षात् प्रतिमा हैं। आपके श्रीमुख से वेद, उपनिषद, व्याकरण, वेदान्त, पुराण, रामायण, भागवत एवं श्रीतुलसीसाहित्य के गृहतमकथाप्रसंग अत्यन्त सरल एवं सरस शैली में स्फुटित होते हैं इसीलिए देश-विदेश के मूर्धन्यमनीषी, भारत के शुभैषी एवं अनेक छात्रप्राप्ति कथावाचक इनके वैदुष्य और सेवा कार्यों से चमत्कृत एवं प्रभावित होते हैं। ध्यगवत्कृपाप्राप्ति नवीन भावों से तथा अहनिश अपनी श्रम संचित शास्त्रीय प्रतिभा से भगवदीय कथाओं को सजाने संबान्धने में सिद्ध एवं प्रसिद्ध पूज्य आचार्यश्री की दिव्यवाणी भक्तों को भगवान के नाम, रूप, लीला तथा धार्म का अद्भुत आनन्द प्राप्त कराने में पूर्ण समर्थ है। ध्यातव्य है कि पूज्य जगद्गुरु जी वेदादिधर्मशास्त्रों के पर्मज्ज तथा शब्दशास्त्र के जहाँ कृशल शिल्पी हैं वहीं शास्त्रीय व्याख्याओं एवं भारतीय जीवन मूल्यों के अद्भुत उद्गाता भी हैं। साथ ही संस्कृत-हिन्दी आदि अनेक भारतीय भाषाओं में स्थायःप्रस्फुटित अपनी रचनाओं के कारण विद्वत्प्रमाज में अद्वितीय स्थान रखते हैं। पूज्यपाद गुरुदेव में शास्त्रीयता, प्राचीनता एवं जागरुकता जैसे अनेक लोकोत्तर गुण सदैव विराजते हैं। हिन्दुराष्ट्र के विशुद्ध चिन्तन एवं संघटनात्मक परिवर्तन के जहाँ ये प्रबल पक्षधर हैं वहीं रामपुरुष आधुनिकता और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के घोर विरोधी भी हैं। पूज्यपाद आचार्यश्री भगवद्भक्ति के साथ-साथ राष्ट्र-भक्ति के भी प्रमुख पुरोधा हैं। इन्होंने प्रस्थानत्रयी पर विशिष्टाद्वैतपरक श्रीराघवकृपाभाष्य लिखा है एवं लगभग ६० मौलिक ग्रन्थों का प्रणयन किया है। इनके द्वारा भारतीय संस्कृति एवं विकलांग बहिन-भाड़ीयों के उत्थान हेतु किये जा रहे संकल्प एवं प्रकल्प देश विदेश में प्रसारित हो रहे हैं। २९ जुलाई २००१ को श्रीचित्रकूटधाम में पूज्यपाद जगद्गुरु जी ने तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्ण सहयोग से विकलांगों के सवाझीण विकास के लिए सेवा संसार में प्रथम कहे जाने वाले “जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय” की स्थापना की है। उल्लेखनीय है कि आपशी ही इस विश्वविद्यालय के “जीवनपर्यन्त कृताधिपति” पद पर समलैकृत हैं। विगत दिनों पूज्य आचार्यश्री को अनेक पुरस्कारों के अतिरिक्त राष्ट्रपति पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं रामकृष्ण जयदयाल डालभिया श्री वाणी अलंकरण से सम्मानित किया गया है। संक्षेप में कहें तो भावुक भक्तों को भगवद्भक्तिरस द्वारा, धर्माचार्यों को शास्त्रानुपेदित धर्माचारण द्वारा, तलस्पर्शी मनीषियों को काव्यानन्द द्वारा, हिन्दुराष्ट्र-भक्तों को राष्ट्रपुरुष श्रीराम के समर्चन द्वारा एवं विकलांग जगत को अहनिश निरपेक्ष सेवा द्वारा आनन्दित एवं धन्य करने वाले भगवत्कृपाप्रवातार पूज्यपाद आचार्यवरण सभी के लिए प्रेरणास्रोत होने से मतत वन्दीय हैं। तो आइए। विश्व के इन विलक्षण विभूति के दर्शन एवं इनके द्वारा कथाश्रवण करके अपना जीवन सार्थक करें साथ ही इनके द्वारा संचालित सभी प्रकल्पों में अधिक से अधिक सहयोग करें।



ॐ नमो राधावाय ॐ

पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज
के राष्ट्रीय, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना के संवाहक

श्रीतुलसीपीठसौरभ

(मासिक पत्रिका)

के सदस्य बनकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक

आचार्य दिवाकर शर्मा

09971527545

सम्पादक

डॉ सुरेन्द्र शर्मा 'सुशील'

09868932755

प्रबन्ध सम्पादक

श्री ललिताप्रसाद बड़थाल

09810949921

सदस्यता सहयोग राशि का विवरण

संरक्षक : 11000 रुपये मात्र

आजीवन : 5100 रुपये मात्र

पन्द्रह वर्षीय : 1000 रुपये मात्र

वार्षिक : 100 रुपये मात्र

कार्यालय : श्रीतुलसीपीठसौरभ, डी-255, गोविन्दपुरम्, गाजियाबाद (उ०प्र०)
ई-मेल : stspatrika@gmail.com

विकलांग सेवा में समर्पित पूज्यपाद जगद्गुरु जी के ऐतिहासिक संकल्प
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ०प्र०)
के लिए किसी भी प्रकार का सहयोग देने हेतु सम्पर्क सूत्र -

यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया

जानकीकुण्ड शाखा, चित्रकूट जनपद सतना (म०प्र०)

जे० आर० वि० वि० चित्रकूट

एकाउण्ट नं० : 421402010005274

दूरभाष : 05198-2244481 मो० 09450916649, 09450916650

वेबसाइट : www.jrhu.com तथा www.jagadgururambhadracharya.com